# सामाजिक समूह

**Miss Chhaya**
**Assistant professor**
**Department of sociology**
**j.k.p.(pg) college muzaffarnagar**

# सामाजिक समूह का अर्थ एवं परिभाषाएं

सामान्य अर्थों में समूह का अर्थ व्यक्तियों के संग्रह से लगा लिया जाता है लेकिन उसे समूह की संज्ञा नहीं दी जा सकती इसका कारण यह है कि उन व्यक्तियों में सामाजिक संबंधों में चेतना का अभाव पाया जाता है। चेतना अभाव के कारण परस्पर संबंध स्थापित नहीं होते। समूह के लिए एक जैसे उद्देश्य अंतरिया एवं संचार का होना अति आवश्यक माना जाता है। अर्थात जिस समय दो या दो से अधिक व्यक्ति समान उद्देश्य या स्वार्थों की पूर्ति के लिए परस्पर संबंध का निर्माण करते हैं। और अपने व्यवहारों द्वारा एक दूसरे को प्रभावित करते हैं तो उसे सामाजिक समूह की संज्ञा प्रदान की जाती है।

**बोगार्ड्स तथा जानसन के अनुसार-"**समाजशास्त्र को संबंधों का नहीं बल्कि समूह का अध्ययन करने वाला विज्ञान माना जाता है।"

**कूले के अनुसार-**" व्यक्ति और समूह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।"

**फीचर के अनुसार-"**समूह सामाजिक व्यक्तियों का परिचित रचित निरंतर समूह है जो समान लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आदर्श स्वयं मूल्य से बंधा होता है।"

**मैकाइवर एवं पेज के अनुसार-"**पारस्परिकता एवं जागरूकता को समूह के लिए आवश्यक माना है।"

# सामाजिक समूह की विशेषताएं

1. दो या दो से अधिक व्यक्तियों का संग्रह
2. एक जैसी रूचि, स्वार्थ एवं उद्देश्य
3. प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष संपर्क
4. एक जैसा आदर्श नियम एवं मूल्य
5. पारस्परिकता एवं जागरूकता
6. एक निश्चित ढांचा संरचना
7. सहयोग की भावना
8. कार्यों की भावना
9. समूह में थोड़ी बहुत स्थिरता एवं स्थायित्व
10. सीमित संख्या
11. समूह व्यक्तियों से बने होने के कारण मूर्त है
12. स्तरीकरण का होना अति आवश्यक है

# समूह निर्माण के तत्व

- **मर्टन** ने समूह के तीन तत्व बताएं –

  दो या दो से अधिक व्यक्ति, अन्तक्रिया के द्वारा अंतर्संबंध, हम की भावना
- **वस्तुपरक इस** प्रकार के लोग समूह के बाहर के सदस्य होते हैं लेकिन वे लोग यह अनुमान लगाते हैं कि वे दोनों अमूक समूह के सदस्य हैं।
- **व्यक्तिपरक** इसमें स्वयं समूह के सदस्य होते हैं जो यह आवाज करते हैं कि हम अमूक समूह के सदस्य हैं।
- **बीरस्टीड** ने समूह निर्माण के तीन आवश्यक तत्व बताएं हैं-

  चेतना, अन्तक्रिया, सामाजिक संगठन
- **गिलिन एवं गिलिन** ने दो प्रकार बताए हैं-

  उत्तेजना**,** अनुक्रिया/प्रत्युत्तर
- **गिलटर** ने दो प्रकार बताए हैं-

**बाह्य पक्ष** यह वह होता है जो दिखाई देता है।

**आन्तरिक पारस** इसे देखा नहीं जा सकता जो हमारे अंदर है।

# समूह निर्माण के आधार

**मैकाइवर एवं पेज** ने सदस्यों की संख्या के आधार पर समूह को तीन भागों में बांटा है-

1. क्षेत्रीय समूह/प्रादेशिक इकाई वाला समूह
2. हितों के प्रति चेतन समूह जिसका निश्चित संगठन नहीं होता है
3. हितों के प्रति चेतन समूह जिसका एक निश्चित संगठन होता है

**गिलिन एवं गिलिन** ने समूह को छः भागों में बांटा है-

1. रक्त संबंधी समूह
2. शारीरिक विषमताओं पर आधारित समूह
3. क्षेत्रीय समूह
4. अस्थायी समूह
5. स्थाई समूह
6. सांस्कृतिक समूह

**जॉर्ज हसन** ने समूह को चार भागों में बांटा है-

1. असामाजिक समूह
2. समाज विरोधी समूह
3. समाजपक्षी समूह
4. आभासी सामाजिक समूह

**गिडिग्स** ने प्रस्थिति के आधार पर समूह को दो भागों में बांटा है-

1. वियोजन समूह
2. सम्मिश्रित समूह

**कूले** ने सम्बन्ध के आधार पर समूह को दो भागों में बांटा है-

1. प्राथमिक समूह
2. द्वितीयक समूह

**मर्टन** ने सदस्यता के आधार पर समूह को दो भागों में बांटा है-

1. सदस्यता समूह
2. असदस्यता समूह

**बोगार्डर्स** ने समूह को दो भागों में बांटा है-

1. अनौपचारिक समूह
2. औपचारिक समूह